

16. RAGH. 8, 14. KATHÁS. 6, 41, 7, 45, 8, 12, 19, 23, 38, 54. RĀGA-TAR. 1, 238. 4, 515. BHAR. zu ÇĀK. 3, 6. PHAR. 41, 9. BHĀG. P. 3, 11, 6, 22. (भाषा) वह्नि-
शेद्वाप्यते धर्मान्निषताद्यावहारिकात् M. 8, 164. वह्निस्त्वं तत्रधर्मतः MBH. 14, 2304. MĀRK. P. 27, 5. तद्वह्निः *ausserhalb desselben* Spr. 3612. ग्र० *inwendig, im Herzen* BHĀG. P. 3, 9, 37. वह्निर्धर्मान्नियोगेन JĀGŪ. 3, 295. MBH. 4, 795. MRĪKŪ. 98, 24. KATHÁS. 10, 110. वह् RĀGA-TAR. 4, 570. चरु
BHĀG. P. 6, 18, 49. या 4, 29, 8. प्राणा यान्तु वह्निः KĀT. 2. KATHÁS. 28, 143. गम् 3, 39, 6, 156. 20, 118. AK. 3, 3, 18. ÇUK. 44, 4. निर्गम् KATHÁS. 3, 8, 7, 20. MĀRK. P. 22, 46. 23, 91. H. 1034. निर्या Vid. 114. निष्क्रम् PAÑKAT. 233, 4. निष्पत् आङ. 10, 62. निःसरु Hit. 14, 21. 23, 2. 58, 8. संसारदुःखं वह्नि-
हन्तिपति BHĀG. P. 3, 3, 88. भू Z. d. d. m. G. 14, 373, 24. जलाद्वह्निर्व
komme aus dem Wasser heraus PAÑKAT. 141, 19. ग्रामवह्निर्नित् *aus dem Dorfe herausgetreten* P. 3, 1, 119, Sch. राष्ट्रदेनं वह्निः कुर्यात् *verjagen aus* M. 8, 380. विषयाद्वह्निः Spr. 22. Hit. 113, 9. Z. d. d. m. G. 14, 372, 22. ये वमयो नेरुस्य अयागाराद्वह्निः *herausgenommen* R. 2, 76, 13. वह्निः कृता हिमवता गङ्गा च वह्निः कृताः । सरस्वत्या यमुनया कु-
रुनेत्रेण चापि ये ॥ *ausserhalb des Him. u. s. w. wohnend* MBH. 8, 2029. वह्निः कुर्युः सर्वकार्येषु चैव तम् *ausschliessen* JĀGŪ. 3, 295. ज्ञातिवह्निः कृता-
ताम् R. 3, 77, 17. ईर्यारिषो वह्निः कृत्य पीतशेषमिवोदकम् *von sich abwerfen* R. Schl. 2, 27, 8. स्पर्शान्क्वा वह्निर्वह्निः BHĀG. 5, 27. सोमाहुत्या वह्-
निः कृता *ausgeschlossen von* BHĀG. P. 9, 3, 26. सर्वधर्मवह्निः कृत M. 9, 238. JĀGŪ. 1, 93. MBH. 3, 13353. 14, 2306. तीर्थवह्निः कृतः *frei von* RĀGA-TAR. 1, 38. चेतनया वह्निः कृते कृताशने BHĀG. P. 4, 24, 40. कामभोगं *ermangelnd des Liebesgenusses, des Liebesgenusses zu pflegen nicht vermögend* MBH. 3, 10353. KATHÁS. 7, 23. यज्ञदानं *sich enthaltend* MBH. 3, 1760. रसज्ञानं *beraubt, ermangelnd, nicht besitzend* 13, 4045. सर्वदापि R. 3, 44, 34. KATHÁS. 27, 208. रागद्वेषं *frei von* RĀGA-TAR. 1, 7, 91. 3, 329. 6, 118. लक्ष्मीं 153. वह्निः कृत und वह्निर्गत so v. a. zur Erscheinung gekommen, leibhaftig erschienen: तस्यामन्ननि मे सुतः । वह्निः कृतः कुल-
स्येव कृत्स्नस्य हृदयोत्सवः KATHÁS. 22, 153. वह्निर्गतमिवानन्तं तद्विवेश पुरातनम् 10, 49. अचिरेण च तो प्राप पुरीम् — वह्निर्गतामिवात्मीयेदश-
दर्शननिर्वृतिम् Vid. 323. — Vgl. बाह्य.

वह्निः स. वर्त.

वह्निःसंस्थ (वह्निम् + सं) adj. *ausserhalb (der Stadt) gelegen, — be-
findlich: मथुरायां संस्थं निधानम्* KATHÁS. 34, 68.

वह्निःसैद् (वह्निम् + सैद्) adj. *draussen sitzend, Bez. eines Verachteten* TBR. 3, 4, 1, 16.

वह्नीनर (व) m. N. pr. eines Mannes P. 7, 3, 1, VArtt. 1. ein Fürst MBH. 2, 326. ein Grosssohn Çatānika's BHĀG. P. 9, 22, 42. Verz. d. Oxf. H. 40, b, 21. — Vgl. अहीनर.

वह्नीरुण्णु adv. so v. a. रज्ज्वा वह्नीरुणि KĀT. ÇR. 16, 8, 22.

वङ् (von वह्. वङ्) UNĀDIS. 1, 30. adj. f. वङ्ग und वङ्गी P. 4, 1, 45. Vop. 4, 28. Accent eines mit वङ्ग anlautenden adj. comp. P. 6, 2, 30. 175. fg. Im RV. selten, nur im 10ten Buch öfter gebraucht; im AV. ganz gewöhnlich. 1) *reichlich, viel, zahlreich; vielfach, oftmalig* AK. 3, 2, 12, 62. TAUK. 3, 3, 458. H. 1423. 1430. an. 2, 600. MED. h. 6. HALĀJ. 4, 16. VAI. beim Schol. zu ÇIK. 10, 50. RV. 1, 84, 9, 93, 4. वङ्गीश्च भूयसीश्च

188, 5. 2, 18, 3. वङ्गनामवमायु सख्ये 33, 12. न वङ्गो न द्याः 4, 23, 5. व-
ङ्गीनां पिता वङ्गस्य पुत्रः 6, 73, 5. 10, 14, 1. वङ्गवे ज्ञानाय 102, 8. 107, 3. वङ्गीः समीः 124, 4. 142, 3. 5. स्वर्गे लोके वङ्ग स्त्रीणामेयाम् AV. 4, 34, 2. धर्ममद्वङ्ग 10, 8, 22. वङ्गः. धर्मकाः 1, 27, 3. 18, 3, 61. VS. 19, 44. 23, 25. TBR. 2, 2, 3. AIT. BR. 1, 7, 2, 2. 11. 3, 23. 3, 30. 7, 18. 8, 11. ÇAT. BR. 14, 6, 8, 10. 7, 1, 14. योदन KĀT. ÇR. 5, 6, 30. 6, 3, 18. — M. 3, 129. N. 3, 43. 7, 17. 9, 21. 13, 13. R. 1, 1, 9. 8, 21. KATHÁS. 4, 76. वङ्गः स्त्रियः M. 8, 77. R. 2, 89, 8. ÇĀK. 71. सुवङ्गः स्त्रियः Vid. 288. वङ्गः (fehlerhaft für वङ्गः) सत्यस्य कन्याः HARIV. 8003. अल्पं वा वङ्ग वा फलम् M. 7, 86. कल्याण 3, 55. रुधिरं Hip. 2, 11. N. 24, 15. KATHÁS. 4, 85. वङ्गी कथा Spr. 916. वङ्ग देयं च नो ऽस्तु M. 3, 239. अल्पस्य हेतोर्वङ्ग कृतमिच्छन् RAGH. 2, 47. वङ्गना किं प्रलापेन R. 1, 33, 25. यत्र दग्धो ऽस्मि तद्वङ्ग *das will viel sagen* MBH. 13, 2863. त्वया हि मे वङ्ग कृतम् — यत् N. 18, 18. किं वङ्ग-
नां *wozu der vielen Worte?* ÇĀK. 23, 16. 39, 2. Hit. 37, 20. Vet. in LA. 12, 20. 32, 1. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 149; vgl. किमन्यैर्वङ्गभाषितैः Vet. in LA. 17, 7. mit dem gen.: अल्पं वा वङ्ग वा यस्य श्रुतस्योपकोरति यः M. 2, 149. reich an (intr.): प्रवर्तयै वङ्गं कथि VS. 17, 50. ÇAT. BR. 1, 8, 1, 9. यौवङ्गी नन्नत्रैः 2, 1, 4, 28. 10, 6, 1, 6. वङ्गुः, वङ्गुः, वङ्गुः, वङ्गुः u. andere comp. TBR. 3, 8, 5, 3. वङ्गुपुष्पलोपग M. 1, 46. INDR. 3, 14. R. 1, 1, 30. PAÑKAT. 176, 3. compar. वङ्गतरं *zahlreicher, mehr, allzuviel, recht viel*: किं स्विद्वङ्गतरं तृणात् MBH. 3, 17344. चित्ता वङ्गतरं तृणा-
त् 17345. ० दिवसं *mehrere Tage* Schol. in der Einl. zu KĀCĀP. न पथ्यं नेपथ्यं वङ्गतरमनङ्गात्सवविधौ *allzuviel* Spr. 2792. किमर्थमसौ वङ्गतरं याचते *etwas viel* Vet. 29, 3. वङ्गतरं इव ज्ञातः (अग्निः) *umfangreicher, stärker* Rt. 1, 26. एतदेवास्माकं वङ्गतरं पदयम् — निर्वाणं प्रतिलभामहे *es ist schon sehr viel für uns, dass* SADDH. P. 4, 28, b. superl. वङ्गतम in der Stelle: आ वङ्गतमात्पुरुषादन्नमति *bis auf die fernsten Nachkommen* SHADY. BR. 2, 1. वङ्ग adv. *viel, wiederholt, oft; stark, sehr*: वङ्ग साकं सिंसिचरुत्समुद्रिणम् RV. 2, 24, 4. वङ्गेऽतदपामि 10, 10, 11. धैर्येषां वङ्ग विन्यतामिषेषां व्रतु मर्मणि AV. 8, 8, 20. 4, 28, 4. पृथिव्यां वङ्ग रोचते 11, 3, 26. ÇAT. BR. 4, 1, 5, 14. वङ्ग कृपमवृपात् TS. 2, 4, 1, 2. न वङ्ग वदेत् PAÑKAT. BR. 13, 12, 14. वङ्ग कृवः ÇAT. BR. 6, 3, 5, 11. 8, 1, 1, 2. P. 5, 4, 20. Sch. KENOP. 23. BHĀG. P. 4, 7, 39. संश्रयत्येव तच्छीलं नरो ऽल्पमपि वा वङ्ग *in geringerem oder in höherem Grade* M. 10, 60. विलप्य कर्णं व-
ङ्ग N. 10, 28, 11, 19, 13, 38. DAĞ. 2, 55. Hit. 43, 12. ० शस्त MBH. 13, 475. ० क-
ल्याण N. 12, 29. ० रम्य R. 4, 26, 7. ० ग्रन्थ MBH. 3, 12842. ० चित्र Spr. 3161. ० निर्वद्वान् PAÑKAT. III, 188. ० सदृशं *sehr ähnlich, — passend* 73, 15. Nach P. 5, 3, 68 und Vop. 7, 64 vor adj. *beinahe, ziemlich* (vgl. ० तृणा, ० त्रि-
वर्ष) : वङ्गयु Sch. वङ्ग (könnte auch als acc. neutr. gefasst werden) मन् *Jmd oder Etwas für viel halten, zu schätzen wissen, hoch anschla-
gen*: वित्ते रमस्व वङ्ग मन्यमानः RV. 10, 34, 13. न पुष्टं वङ्ग मन्यते VS. 23, 31. ÇAT. BR. 14, 6, 8, 12. ÇĀNKH. ÇR. 16, 4, 4. MBH. 3, 747. 10063. Spr. 2473. 2887. ÇĀK. 143. RAGH. 12, 89. KATHÁS. 3, 27. 32, 178. MĀRK. P. 77, 10. SĀH. D. 39, 8. 60, 8. BHATT. 3, 53. 3, 54. 8, 12. येषां च वं वङ्गमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् BHĀG. 2, 35. N. 13, 12. भर्तुर्वङ्गमता भव ÇĀK. 82. Spr. 1434. उमायास्तद्वङ्गमते भविष्यति R. 1, 38, 8. MRĪKŪ. 177, 9. SĀH. D. 35, 13. सीता प्राणैर्वङ्गमता *höher als das Leben gestellt* R. 1, 67, 23. वं भूत-
संघं वङ्ग मानयेयाः MĀRK. P. 23, 15. compar. वङ्गतरम् adv.: वङ्गतरं कू-